॥ ओ३म् ॥

खण्डन मण्डन ग्रन्थमाला—सं० १३

पौराणिक मुख चपेटिका

पौराणिक आक्षेपों का मुह तोड़ उत्तर

लेखक—

डा० श्रीराम आर्य

कासगंज

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक 2865
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

प्रकाशक—

वैदिक साहित्य प्रकाशन संघ

कासगंज (उ० प्र०)

प्रथम वार १०००

दयानन्दाब्द—१३७
सृष्टि सम्वत् १६७२६४६०६१
सन् १६६० ई०

मूल्य २५ न० पै०

संशोधित मू० ०,१६ न० पै०

क्रमिक संख्या ...३६०३

ओ३म्

बाकनेर तहसील खैर जि. अलीगढ़ में आर्य समाज व सनातन धर्म सभा के मध्य ता० ४ जून सन् ६० को शास्त्रार्थ का आयोजन किया गया था। उन दिनों में स्थानीय आर्य समाज का प्रथम वार्षिकोत्सव भी था। शास्त्रार्थ का बहुत भारी प्रचार किया गया था। आर्य समाज के कई विद्वान उत्सव पर उपस्थित थे। परन्तु सनातन धर्म मंडल के पास कोई भी विद्वान नहीं था। उनके प्रमुख विद्वान पं० माधवाचार्य जी शास्त्रार्थ के दिन से कई दिन पूर्व वहाँ दर्शन देकर बहाना करके शास्त्रार्थ से जान बचाकर भाग चुके थे। केवल वयोवृद्ध पं० भीमसैन जी जो स्वयं दमे के मरीज होने से ज्यादा बोलने तक में असमर्थ हैं, शास्त्रार्थ की खाना पूरी के लिए सनातन धर्म के पण्डाल में से भागने से जबर्दस्ती रोक लिए गये थे। आर्य समाज की ओर से शास्त्रार्थ के नियम, विषय आदि तै करने की भरपूर कोशिश की गई। ता० ३ की सारी रात भी इसी प्रयत्न में बीत गई, पर सनातन धर्म सभा ने कोई भी बात तै नहीं होने दी। नियम व किस २ विषय पर कब २ शास्त्रार्थ होगा, पहिले कौन बोलेगा, कौन सा पक्ष प्रश्न करेगा, दूसरा पक्ष कब प्रश्न करेगा, आदि शास्त्रार्थ कितनी देर व किस समय से किस समय तक होगा, शान्ति व्यवस्था, की जिम्मेवारी प्रधानादि का निर्णय आदि विषयों का पूर्ण निश्चय हुए बिना शास्त्रार्थ नहीं होते हैं। बाकनेर में भी सनातनी अड़ियलपन के कारण कोई भी बात तै न हो सकी। तो फिर शास्त्रार्थ किससे और कौन व कैसे करता। असल बात यह रही कि सनातनी पक्ष के पास विद्वान न होने से उन्होंने अपनी झेंप मिटाने के लिए एवं आर्य समाज के उत्सव में बाधा डालने के लिए हुल्लड़ बाजी करके झगड़ा फिसाद करने का गन्दा मार्ग अपनाया था। बिना बुलाये पौराणिक दल आर्य समाज के उत्सव में हुल्लड़ मचाता हुआ आगया। आर्य समाज ने शास्त्रार्थ का विषय पूछा तो जवाब दिया कि हम प्रश्न सत्यार्थ प्रकाश पर करेंगे। आर्य

समाज ने उनके प्रश्न करने का अवसर दिया। पं० भीमसैन जी से प्रारम्भ में कहा गया कि शास्त्रार्थ दो घन्टे तक होगा तो उन्होंने कहा कि एक ही घन्टा काफी होगा। पं० भीमसैन जी ने कई प्रश्न पेश किये। आर्य विद्वान शास्त्रार्थ महारथी श्री ठा० अम सिंह जी ने आर्य समाज की ओर से उनका अकाट्य उत्तर दे दिया। उसके बाद पं० भीमसैन जी ने अपनी दोनों बारी में उन्हीं प्रश्नों को दोहराया। श्री ठा० अमरसिंह जी ने उन्हीं उत्तरों को दोहराते हुए कहा कि आपके पास कोई नये प्रश्न हों तो पेश कीजिये या हमारे दिये जवाबों का खण्डन कीजिये। पं० भीमसैन जी न तो ठा० अमरसिंह जी के उत्तरों का खण्डन कर सके और न कोई नया प्रश्न ही पेश कर सके। एक घन्टे में १०-१० मिनट तीन बार बोलने में जब पं० भीमसैन जी का दम उखड़ गया तो वे बैठ गये। इस पर सनातनी पार्टी ने हमारे पंडाल में सनातन धर्म की जै आदि बोलकर अपनी घोर असभ्यता का परिचय दिया जैसा कि सनातनी लोग प्रायः सभी जगह किया करते हैं। उस समय बेशुमार जनता उपस्थित थी। उस पर आर्य समाज के पक्ष की सत्यता एवं सनातनी पंडित की घोर पराजय एवं उनकी हुल्लड़बाजी का गहरा प्रभाव पड़ा। आर्य समाज की ओर से बार २ कहा गया कि यदि शास्त्रार्थ का गर्व बाकी हो तो शास्त्रार्थ जारी रखा जा सकता है। पर जब सनातनी पक्ष की पराजय हो गई तो फिर उसका जनता के सामने जमना कोई खेल नहीं था। सनातनियों की हुल्लड़बाजी को देखकर शान्ति एवं व्यवस्था रखने के लिए उपस्थित थानेदार महोदय ने व्यवस्था की कि शास्त्रार्थ तब तक नहीं होगा जब तक कि उसके लिए नियम व विषय आदि का निर्णय होकर पहिले हमको नहीं दे दिया जावेगा।

आर्य समाज की ओर से हम शास्त्रार्थ में उपस्थित थे। सारा घटना क्रम हमारे सामने चला था। इस सत्यता को छुपाने के लिए, एवं अपनी पराजय की झेंप मिटाने के लिए अब सनातन धर्म मंडल

बाँकनेर ने सत्य के सर्वथा विपरीत ८ पेजी ट्रैक्ट छाप कर बाँटा है। जिसमें सनातनी सभ्यता का नग्न स्वरूप प्रदर्शित किया गया है। इस ट्रैक्ट में कई प्रश्न पेश किये गये हैं जिनके स्पष्ट उत्तर शास्त्रार्थ में दिये गये थे जिससे सनातनी पंडित की बोलती बन्द हो गई थी। इस ट्रैक्ट में उन्हीं को पुनः उठाया गया है। अतः हम उनका पुनः जवाब देते हैं।

प्रश्न १—स्वामी दयानन्द जी की माता का नाम क्या था?

उत्तर—यह सन्यासियों की परम्परा है कि वे अपने परिवार व घर का पता नहीं बताया करते हैं। स्वामी दयानन्द जी ने भी अपने वंश व स्थान का कोई ठीक पता नहीं दिया था। खोज करने से बहुत प्रयत्न करके उनकी जन्म भूमि का पता मालूम किया जा सका है। किसी की माता या पिता का नाम बताना या न बताना कोई सिद्धान्त या शास्त्रार्थ का विषय नहीं होता है। हम यदि स्वामी जी की माता का नाम बता देवें तो क्या इससे आर्य समाज की विजय व सनातन धर्म की पराजय आप स्वीकार कर लेंगे? ऐसे प्रश्न मूर्खों की दुनियाँ में शास्त्रार्थों में किये जाया करते हैं। अपने दिमागों को सही करने के लिए आप अपने पौराणिक ऋषियों की माताओं के नाम भी सुन लीजिये। आपके पुराणकारों की इस रिसर्च स्कालरी पर संसार आपकी तारीफ करता है।

शुकदेव जी—शुकी (तोती) से पैदा हुए।
कणाद ऋषि—उल्लू से पैदा हुये
शृङ्ग ऋषि—मृगी (हिरनी) से पैदा हुये
वशिष्ट ऋषि—गणिका (रण्डी) से पैदा हुये
माण्डव्य मुनि—मण्डूकी (मैंढकी) से पैदा हुये

क्या आप बता सकते हैं कि राम की पड़दादी का नाम क्या था? ब्रह्मा-विष्णु-शिव की मां का नाम क्या था? कोई पूछे कि सनातन धर्म मंडल बांकनेर के मंत्री व प्रधान के पड़दादा की दादियों के नाम

क्या थे ? तो क्या सनातनियों के बाप-दादों की दादी पड़दादियों के नाम पूछना कोई सभ्यता पूर्ण शास्त्रार्थ के सवालात हो ? स्वामी दयानन्द जी की माता का नाम पूछना तो सनातनी पंडित की घोर पराजय का खुला सबूत था। शास्त्रार्थ में प्रश्न ऐसे किये जाते हैं जिनका सम्बन्ध धर्म व सिद्धान्तों से होता है, और एक पक्ष उन बातों को मानता है व दूसरा नहीं मानता है। तो शास्त्रीय सिद्धान्त का निर्णय करने के लिए शास्त्रार्थ होते हैं। उस व्यर्थ के प्रश्न को करने से ही सनातनी पक्ष की दुर्बलता स्पष्ट है।

प्रश्न २—स्वामी जी ने अमैथुनी सृष्टि में हजारों जोड़े स्त्री पुरुष पैदा होने की बात कही है। (उस पर आपके ऐतराज हैं)।

उत्तर—यह प्रश्न बांकनेर शास्त्रार्थ में पेश नहीं किया गया था। ट्रैक्ट लेखक यहां के शास्त्रार्थ की समालोचना करने बैठा है। उसे नया प्रश्न उठाने का अधिकार नहीं है। फिर भी हम उससे पूछते हैं कि क्या वह यह बता सकता है कि आरम्भ सृष्टि में प्रारम्भिक मानवी सृष्टि कैसे हुई थी। हम कहते हैं कि सारे पौराणिक साहित्य में कोई भी एक सर्व सम्मत सृष्टि उत्पत्ति का प्रकार नहीं दिया है। यदि दिया है तो कोई भी पौराणिक विद्वान प्रगट करे। क्या वह यह मानता है कि सारे संसार के सनातनी केवल एक ही स्त्री पुरुष के जोड़े से उत्पन्न भाई बहिन की औलादें हैं ? क्या उसे आदमहव्वा की मुसलमानों की कल्पना स्वीकार है जिसमें भाई बहिनों के विवाह होते चले आते हैं ? क्या वह बता सकता है कि सबसे प्रथम मानव सृष्टि बिना माता पिता के कैसे हुई ? यदि उसके पास कोई जवाब नहीं है तो उसे सत्यार्थ प्रकाश के वैज्ञानिक बुद्धिगम्य सिद्धान्त पर मुंह खोलने का कोई अधिकार नहीं है ?

प्रश्न ३—स्वामी दयानन्द जी ने चोटी कटाने का विधान किया है !

उत्तर—चोटी कटाने का विधान विशेष स्थितियों में सनातन धर्म में भी किया गया है। देखिये प्रमाण—

पादेऽङ्गरोवपनं द्वियादेश्यश्रुणोऽपि च।
त्रिपादेतु शिखावर्ज्यं स शिखंतु निधातेन॥ (पाराशर स्मृति अ ६-१४)

अर्थ—पादकृच्छ्र प्रायश्चित में शरीर के रोम मुंडावे, आधे कृच्छ्रवृत्त में दाढ़ी मूंछ भी मुड़ा दे। त्रिपादव्रत में शिखा को छोड़कर मुंडावे और पूरे कृच्छ्रवृत में शिखा सहित बालों को मुंडा दे।

इसी प्रकार शिवपुराण वायु सं० उत्तर खं. अ १८ में श्लो. ३२ व ३६ में 'कुर्यात्तस्य शिखाच्छेदं' कह कर चोटी काटने का आदेश दिया गया है।

यजुर्वेद में अ १७ में मंत्र ४८ में 'विशिखाइव' पद है जिस का अर्थ सनातनी भाष्यकार उव्वट ने 'सर्वमुण्डा' तथा महीधर ने 'शिखारहिता मुण्डित मुण्डा' अर्थात् शिखा कटा देने का विधान किया है। जब सनातन धर्म के शास्त्रों में आवश्यकता पर चोटी सहित बाल कटा देने का विधान है तब फिर स्वामी दयानन्द जी ने उसी प्रकार यदि लिख दिया तो उस पर आक्षेप करना यह सनातनी पागलपन नहीं तो क्या है। चोटी या बालों को कब रखाना चाहिए, कब उनको कटाना चाहिए .यह विषय स्वास्थ विज्ञान से सम्बन्ध रखता है। शीत ऋतु में बाल सर पर रखना लाभदायक होता है, विशेष गर्मी में, सर में फोड़े आदि रोग होने की दशा में या मस्तिष्क के रोगों में सर मुड़ाना या बाल कटाना उपयोगी रहता है। सनातनी शास्त्रों में तो चोटी सहित सर मुड़ाने का स्पष्ट विधान है। एक प्रमाण और भी देखें—

मुण्डः शिखी वा वर्ज्ज येज्जीव वधम्॥

(गौतम स्मृति अ० ३।११)

(मुण्डः) सर के सब बाल मुड़ा दे (शिखी) अथवा केवल चोटी धारण करे (वर्ज्ज येज्जीव वधम्) जीवों की हिंसा न करे।

तात्पर्य यह है कि चोटी रखना या न रखना कोई भारी महत्त्व का प्रश्न सनातन धर्म में नहीं है। सनातनी ग्रन्थों में भी चोटी कटा देने के आदेश विद्यमान हैं। स्वामी दयानन्द जी ने भी विशेष उष्णप्रदेशों में दिमाग की रक्षा बालों की गर्मी से करने के लिये शिखा सहित सम्पूर्ण बाल कटाने की बात लिख दी तो सनातन धर्म पर कौन सा बम पड़ गया। ज्यादातर सनातनी लोग चोटी नहीं रखते हैं या दिमागी काम करने वालों के सर के बाल उड़ जाते हैं तो क्या सनातन धर्म सभा उन सभी को महा पतित एवं शूद्र मानती है? क्या नकटे बूचे लोग सनातनी नहीं रहते हैं? क्या चोटी हीन सनातनी लोग ईसाई व मुसलमानों के समान अछूत माने जाने चाहिए।

प्रश्न ४-स्वामी दयानन्द जी ने धाय का दूध बालक को पिलाने की बात लिखी है। (इस पर आपको ऐतराज है?)

उत्तर—यह विषय आयुर्वेदिक का है। किस व्यक्ति या बालक को किस अवस्था में क्या खुराक उसे स्वस्थ रखने को दी जावे, कैसे वस्त्र पहिनाये जावें, कैसे मकान में रखा जावे आदि विषयों का सम्बन्ध आयुर्वेद (स्वास्थ्य विज्ञान) से है। प्रसूता स्त्री की दशा मलीन होती है, उसका स्वास्थ भी ठीक नहीं होता है। अतः चरक व सुश्रुतकारों ने जन्म के बाद बालक के जीवन के लिए उसे धाय रखकर दूध पिलाकर पालने का विधान किया है। देखो चरक शारीरिक स्थान अ ८ के ५३ व ५८ के स्थल तथा सुश्रुत शारीरिक स्थान अ० १० इसी विषय का निर्देश सूत्र रूप से यजुर्वेद में—

'नक्तोषासा समनसा विरूपे धापयेते शिशुमेकं' (यजु अ १२ मंत्र २) में किया गया है कि (शिशुमेकं) एक बालक को (नक्तोषासा) रात और दिन की बेला के समान (विरूपे) माता और धाय (धापयेते) दूध पिलाती हैं (समनसा) वे दोनों मां व धाय बालक के कल्याण के लिए समान मन व विचार वाली होती हैं।

इन प्रमाणों का खण्डन सनातनी पंडित शास्त्रार्थ में नहीं कर सके थे। उनके छक्के छूट गये थे। अब सनातन धर्म सभा फिर उन्हीं प्रश्नों को लिखने बैठी है। कैसा पाखण्ड है। उत्तर मिलने पर फिर भी उन्हीं बातों को दोहराते जाना क्या निर्लज्जता की पराकाष्ठा नहीं है। धाय रखना बालक व प्रसूता के स्वास्थ के लिए उचित है। जो रख सके रखे न रखसके तो वे जाने। तुम्हारे अवतार रामचन्द्र जी को भी धाय ने पाला था।

प्रश्न ५– सत्यार्थ प्रकाश में 'विविधानि च रत्नानिविविक्तेषुपादयेत' यह लिखा है, यह श्लोक मनु स्मृति में नहीं है ?

उत्तर—मनुस्मृति–महाभारत–वाल्मीकि रामायण व पुराण आदि के भिन्न संस्करणों में जो देश में मिले हैं बहुधा पाठ भेद मिलता है। बहुत से श्लोक तक जो किसी एक में मिलते हैं दूसरे में नहीं मिलते हैं। यह विद्वान जानते हैं, वे पढ़े लिखे झांझ मजीरे बजाने व राधे–कृष्ण गा गा कर नाचने कूदने वाले रामलीला में लोड़ों को सीता बनाकर तमाशा कराने वाले बिचारे सनातनी लोग क्या जाने। ये बिचारे तो गोपियां बन २ कर रास में 'ओजा मोरे बालमा तेरा इन्तजार है' यह गा कर नौजवानों को रिझाना जानते हैं।

स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश में जो ऊपर का पद दिया है उसमें और मनु में वर्तमान में पाये जाने वाले–

धनानितु यथा शक्ति विप्रेषुप्रतिपादयेत्।
वेद वित्सु विविक्तेषुप्रेत्य स्वर्गं समश्नुते ॥ (मनु ११–६)

इस श्लोक में केवल पाठ भेद है, अर्थ का भेद कुछ भी नहीं है। दानों में ही विद्वान सन्यासी को लोकहित के लिए धन देने का विधान है। स्वामी दयानन्द जी ने अपने काल में अब से प्रायः १०० वर्ष पूर्व जिसी मनु स्मृति के संस्करण में वही पाठ देखा होगा जो उन्होंने लिखा है। इसमें सनातनियों को परेशान होने की क्या बात है ? सिद्धान्त जो मनु का उक्त श्लोक में है कि दान दिया जावे उसे तो हम व वे दोनों

ही मानते हैं। आक्षेप तो तब बनता था जब सनातनी न मानते होते और स्वामी जी ने लिख दिया होता। स्वामी जी की बात तो मनु महाराज का भी माननीय ही है। अतः यह प्रश्न करना भी तुम्हारा कोरा पाखण्ड फैलाना है।

प्रश्न ६–'वेद पढ़त ब्रह्मा मरे चारौ वेद कहानी' सत्यार्थ प्रकाश का यह वाक्य वर्तमान सुखमनी ग्रन्थ में नहीं है। अतः सत्यार्थ प्रकाश झूठा है।

उत्तर—बहुत सी आयतें जो पहिले बाइबिल में थीं, अब उसमें से निकाल दी गई है। पुराणों में से भी बहुत से श्लोक निकाल दिये गये हैं। जैसे—

'अपहाय निजं कर्म कृष्ण कृष्णेति योवादिनः।
तेहरेर्द्वेषिणः पापाः धर्मार्थंजन्मयद्धरे'॥

यह श्लोक पहिले विष्णु पुराण में था ऐसा गीता रहस्य पृ. ५०१ पर लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने लिखा है, पर वर्तमान छापे के विष्णु पुराण में से निकाल दिया गया है। अतः अब उसमें नहीं मिलता है। इसी प्रकार सुखमनी सिक्खों के ग्रन्थ में ऋषि दयानन्द जी महाराज के काल में अब से प्रायः ८०।९० साल पूर्व यह दोहा वर्तमान था। पर ऋषि ने जब उस पर आक्षेप किया तो समझदार सिक्खों ने यह सोचकर इस दोहे को सुखमनी में से निकाल दिया है कि इससे हिन्दू धर्म की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचती है। तथा इसे निकाल देने से सिक्ख शास्त्र की मान्यता या उसकी महत्ता में कोई अन्तर भी नहीं आता है। यदि कोई सम्प्रदाय अपने ग्रन्थ में से कोई बात निकाल डाले तो उसकी जिम्मेवारी आर्य समाज की नहीं है।

अधूरी सब मानवकृत पुस्तकों में समय २ पर काट छांट सदैव होती रही है। अतः यह प्रश्न आज उठाना कि सुखमनी में आज वर्तमान संस्करणों में यह वाक्य नहीं है, महज नादानी है। आपके

पुराणों में भी पहिले केवल १२००० श्लोक थे, अब प्रायः चार लाख तक मिलते हैं। पद्म पुराण पूना के छपे में २८२ अध्याय उत्तर खण्ड के उत्तरार्ध में हैं जबकि कलकत्ता छापे में केवल २५५ अध्याय ही उसमें हैं। शिवपुराण में धर्म संहिता कभी शामिल थीं। वह शिवपुराण का एक अध्याय था। पर अब किसी शिवपुराण में धर्म संहिता नहीं है। एक बार बम्बई ने छापी भी थी। अब वहां भी नहीं मिलती है। पहिले शि०पु० में १२ संहितायें थीं अब ७ ही मिलती हैं। ऐसे ऊट पटांग प्रश्नों से न तो सत्यार्थ प्रकाश ही गलत साबित हो सकेगा और न सनातन धर्म (सिक्खों के वे पैसे के वकील) की ही विजय हो सकेगी। हां जग में सनातनी पंडितों की अक्ल की मजाक अवश्य बनेगी।

प्रश्न ७–चार ऋषि, अग्नि वायु आदित्य व अंगिरा पर चार वेद प्रगट होने की बातें स्वामी जी ने लिखी है। (इस पर आपको ऐतराज है)

उत्तर –शतपथ ब्राह्मण में लिखा है—

अग्ने ऋग्वेदः, वायो यजुर्वेदः, सूर्यात् सामवेदः (शत ११।५।२।३)

अर्थात्–अग्नि से ऋग्वेद, वायु से यजुर्वेद, सूर्य से सामवेद प्राप्त किये गये। यह अग्नि, वायु, आदित्य (सूर्य) ऋषि ही थे।

सायणाचार्य जी सनातनी वेद भाष्यकार ने मध्यभूमिका में उन अग्नि, वायु आदि को जीव विशेष (ऋषि) माना है। इस पर मनु ने भी—

अग्नि वायु रविस्तुभ्यंस्तत्रयं ब्रह्म सनातनं।
दुदोह यज्ञ सिद्धयर्थमृग्यजुः साम लक्षणम्॥ (मनु १।२३।
'श्रुतीरथर्वाङ्गिरसीः' (मनु ११।३३)

इन प्रमाणों में मनु ने भी चारों वेदों को अग्नि-वायु-आदित्य एवं अंगिरा चार ऋषियों के द्वारा आना माना है—

इसी का प्रतिपादन वेद ने भी किया है। पर जिन्होंने वेद नहीं पढ़े उन नेत्र हीन सनातनियों को ये प्रमाण नहीं दिखाई देते हैं।

यस्मिन्न श्वासऋषभास उक्षणो,
वशामेषा अवश्रष्टा स आहुताः।
कीलालयेसोमपृष्ठायवेध से
हृदामर्ति जनये चारु मग्नये ॥ (ऋ १०-६१-१४)

अर्थ—जिस जगदीश्वर ने सृष्टि के आदि में घोड़े-बैल-गाय-भेड़ आदि उत्पन्न किये, उसने कीलालय (वायु), सोमपृष्ठ (अंगिरा), वेधा (आदित्य) और अग्नि ऋषियों के द्वारा इनके हृदय में चारों वेदों का ज्ञान भी प्रगट किया।

अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा ये उपाधियां हैं जो चार वेदों को प्राप्त करके प्रगट करने वाले चार ऋषियों को मिलती हैं, और वे चारों ऋषि उन्हीं के नाम से प्रसिद्ध होते हैं। सर्व प्रथम इन चारों ऋषियों से जिस व्यक्ति ने चारों वेदों का ज्ञान प्राप्त किया उसे ब्रह्मा कहा गया। जैसा कि मुण्डुक उपनिषद् में लिखा है—

'ब्रह्मा देवानां प्रथम संवभूव विश्वस्य कर्ताभुवनस्य गोप्ता।
स ब्रह्म विद्यायां सर्व विद्या प्रतिष्ठामथर्वाय ज्येष्ठा पुत्राय प्राहः १।

अर्थ—विद्वानों में अग्रणी विद्वान ब्रह्मा हुआ जो उपदेश . . सब में ज्ञान का उत्पादक, संसार का रक्षक था। उसने अथर्वा नाम के अपने ज्येष्ठ पुत्र को सब विद्याओं में श्रेष्ठ ब्रह्म विद्या का उपदेश किया था।

पौराणिक चार मुंह वाले ब्रह्मा के कभी कोई अथर्वा नाम का पुत्र नहीं हुआ। किसी भी पुराण में सारे पौराणिक साहित्य में अथर्वा चतुर्मुखी ब्रह्मा का बेटा नहीं बताया गया है। अतः ऋषि दयानन्द का पक्ष सर्वथा वेदानुकूल एवं सत्य है कि चारों वेदप्रारम्भ सृष्टि में चार

ऋषियों के द्वारा प्रगट हुए। उनके नाम अग्नि-वायु-आदित्य व अंगिरा थे।

सारे पौराणिक पंडित मिलकर भी ऋषि की बात को नहीं काट कते हैं। यह हमारा दावा है।

नं० ८—इन प्रश्नों के अतिरिक्त उक्त ट्रैक्ट में आर्य समाज मन्दिर में गौ मांस खाने व रण्डी नाचने की किसी चण्डूवाज द्वारा अपनी पुस्तक में लिखी गई बे सर, पैर की गप्प को नकल करके लिख मारी है। आर्य समाज मन्दिरों में तो ऐसा नहीं होता है पर सनातनी लोग अपना घर भी जरा देख लें गौ मांस खाना व रण्डी बनाना नचाना व उनसे पेशा कराना सनातन धर्म है या नहीं। मनुष्य का मांस खाना आर्य समाज के किसी ग्रन्थ में नहीं लिखा है। पर सनातन धर्म में नरमांस खाना परम धर्म बताया गया है। प्रमाण नीचे देखें।

श्राद्ध में गौ के माँस से श्राद्ध करने से पितर ११ महीने तृप्त रहते हैं। (विष्णु पुराण गीता प्रेस १-१६-२)

पांच करोड़ गायों का मांस सनातनी ब्राह्मण लोग खा गये।

(ब्रह्म वैवर्त पुराण प्रकृति खं अ ६१ श्लोक ६८-६६)

पांच लाख गायों का मांस तीन करोड़ सनातनी ब्राह्मण मिलकर नित्य ही खाया करते थे।

(ब्रह्म वैवर्त पुराण प्रकृति खं अ ५४ श्लोक ४६)

रुक्मणी (जो बाद को कृष्ण की पत्नी बनी थीं) की शादी में १ लाख गायें काट कर पकाने का आदेश दिया गया था।

(ब्रह्म वैवर्त पु० कृष्ण जन्म खं० अ १०५ श्लो. ६१-६२-६३)

राजारन्ति देव की रसोई में दो हजार बैल रोजाना मार कर पकाये जाते थे।

(महाभारत बन पर्व अ २०७ श्लो. ८, ६, १०)

ब्राह्मण, क्षत्री, व अभ्यागत के लिये बड़ा बैल व बकरा मार कर पकावे। (वशिष्ठ स्मृति अ ४ श्लो. ८)

वाल्मीकि रामायण में भारद्वाज ऋषि के आश्रम में शराब गोश्त से भरत सेना की दावतें दी गई।

(वाल्मीकि रामा. अयोध्या काण्ड सर्ग ६१ श्लो. ५८)

सीता जी ने सैकड़ों घड़े शराब से जमुना पूजन की प्रतिज्ञा की (राम की पत्नी सीता शराब से पूजन जमुना का करे यही तो सच्चा सनातन धर्म है)

(वाल्मी. रामा. अयो० कां. सर्ग ५२ श्लो. ८)

गौ को काट कर उसके मांस से हवन करना।

(देखो गोभिल गृह्य सूत्र प्र० ३ खं० ४ व कात्यायन स्मृति खं० २६)

नरबलि देने का विधान भी (ब्रह्म वैवर्त पुराण प्रकृति खं० अ ६४ में देखलें। यह तो आप जानते ही होगे कि बलि देकर मांस खाना सनातन धर्म का खास अङ्ग है।)

इस प्रकार शराब खोरी व गौ मांस खाना तो सनातन धर्म का अङ्ग है। आपके शास्त्र इस पापाचार से भरे पड़े हैं। हम सैकड़ों प्रमाण आपके धर्म के मान्य ग्रन्थों में से दे सकते हैं। आर्य समाजों में बेहूदी बातों का खण्डन होता है। ऐसे कुकर्मों के लिये सनातनी मन्दिर ही बनाये गये हैं जहां देवी-देवताओं पर पशुओं का ही नहीं वरन नरबलि तक देने का विधान सनातन धर्म में किया गया है। ज़रा दक्षिण भारत के अपने सह धर्मियों के मन्दिरों में जाकर दशा देख लो तो आंखें खुल जावेंगी। मन्दिरों में देव दासियां कौन होती हैं और वे क्या पेशा करती हैं, उनका हाल मालुम करके देख लेवें। आपके अवतार श्रीकृष्ण जी १६१०८ पत्नियों के साथ बैठे शराब पी रहे थे। वे ही कृष्ण की १६००० पत्नियां वेश्यायें बनी। वेश्याओं का प्रारम्भ सनातन

धर्म के अवतार श्रीकृष्ण जी की पत्नियों से हुआ है. ऐसा आपका धर्म मानता है। देखना हो तो पद्मपुराण सृष्टि खं० अ २३ कलकत्ता छापा तथा भविष्य पुराण उत्तर पर्व अ० १११ में पढ़लो। वहां लिखा है कि रंडियों को चाहिये कि पुराण जानने वाले पण्डित को बुलाकर बिना फीस रण्डी उनको तृप्त कर दिया करें और यदि किसी दूसरे की भी पण्डित जी सिफारिश कर देवें तो उसे भी बिना फीस रतिदान देकर तृप्त कर दिया करें तो रंडियों को सीधा विष्णुलोक मिलेगा। आशा है स्वर्ग में जाकर भी वे सनातनी पंडितों की बिनाफीस सेवा किया करेंगी यह है रण्डी उद्धार का सनातन धर्मी नुस्खा। अब समझ में आ गया होगा कि रण्डियां कौन हैं कब से हैं और उनका उद्धार सनातन धर्मी पंडित लोग कैसे करते हैं। इन रंडियों के नाच व उद्धार सनातनी मन्दिरों में ही होते हैं। आर्य समाज मन्दिरों में नहीं होता है। पौराणिको! यदि लाज आती हो तो पुराणों का संशोधन कराओ, वरना सनातनी संसार में मुंह दिखाने लालक भी नहीं रहेंगे।

एक तुम्हारे सनातनी महा पंडित दीनानाथ जी शास्त्री ने सनातन धर्मालोक ६ में लिखा है कि गोपियों के गुप्तांगों में कीड़े पड़ गये थे। उससे उनका कामदेव बहुत जोर करता था। श्रीकृष्ण जी संभोग द्वारा उन कीड़ों को मार २ कर गोपियों का कामभाव मिटाया करते थे। शिव-लिंग पूजा के समर्थन में लिखा है कि माता पिता के गुप्तांगों की पूजा पुत्र आदि करेंगे तभी माता पिता की सच्ची पूजा होगी।' यह है तुम्हारा सनातन धर्म।

नं० ६ अपने ट्रैक्ट के मुख पृष्ठ पर सनातन धर्म सभा ने एक ग़ज़ल दी है—

सनातन सूर्य पर उठा कर मुंह जो थूकेगा।
ज़माना ही नहीं केवल वह अपने मुंह पर थूकेगा॥

इस पर हमारा उत्तर है कि आपने यह तो मान ही लिया कि लोग आपके सनातन धर्म के मुंह पर थूकते हैं। पर आपने यह नहीं सोचा

कि आखिर सनातन सूर्य में ऐसी कौन सी खराबी है जिससे लोगों को उस पर थूकने की जरूरत पड़ती है। वास्तव में सनातन धर्म जिसे आप मानते हैं वह बुराइयों का भण्डार है, वह अन्धकार का गोला है। पर यदि आप उसे सूर्य मानते हैं तो हमारा उत्तर है कि आप अपने अति पतित एवं घृणा के योग्य सनातनी सूर्य का स्वरूप भी समझ लेवें। आपके पुराणों में आपके सनातन सूर्य के बारे में लिखा है—

विवस्वान् भ्रात्रजां गृहीत्वा श्रेष्ठवान् भूत ।२८

अर्थ—सूर्य ने अपनी भतीजी से संभोग करके श्रेष्ठता प्राप्त की।

तत्रस्थिता प्रिया संज्ञा वडवारूप धारिणी ॥३७
कामातुरो हयोभूत्वा तत्र रेमे तया सह ॥३८
(भविष्य प्रतिसर्ग खं०४ अ० १८)

अर्थ—वही प्रिया संज्ञा घोड़ी का रूप धर के खड़ी थी। सूर्य भी कामातुर हो गये और खुद घोड़ा बन कर उसके साथ रमण कर डाला।

अश्वरुपेण मार्तण्डस्तां मुखेन समासदत।
मैथुनाय विचेष्ठंती परं पुंसो विशंकया ॥५५
सातं वैवस्वतं शुक्रं नासाभ्यां समधारयत्।
देवौ तस्याम जायेतामश्विनौ भिषजां वरौ ॥५६
(भविष्य पु० ब्राह्म० पर्व अ० ७६)

अर्थ—सनातनी सूर्य भगवान घोड़ा बन गये और उसके मुंह में मैथुन कर डाला। क्योंकि उस संज्ञा (सूर्य की भतीजी) ने पर पुरुष से विषय कराने में सकोच किया था। ५५। अतः उसने मुंह में मैथुन कराकर सूर्य के वीर्य को नाक के द्वारा ग्रहण किया। इससे दो अश्विनी कुमार पैदा हो गये जो देवताओं के वैद्य माने जाते हैं ॥५६

इन्हीं सनातन सूर्य भगवान ने क्वारी कुन्ती के गर्भाधान कर दिया था जिससे कर्ण पैदा हो गये थे।

आप का भी यदि सनातन सूर्य ऐसा ही है जैसा पुराणों में उसका वर्णन है तब तो उस के ऊपर हमको ही क्या सारे संसार को थूकना चाहिये।

हमारा निवेदन है कि सनातन सूर्य के मुखाधान व नासिका धान के कुकृत्य का अनुकरण बांकनेरी सनातन सूर्य को अपने घरों में नहीं करना चाहिये। वरना सनातनी नारियां विद्रोह खड़ा कर देने पर विवश हो जावेगी और पुलिस को हस्तक्षेप करने का मौका मिलेगा। सनातन सूर्य हवालात के सींकचों में बन्द दिखाई देगा।

एक आक्षेप यह किया गया है कि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने शिव पुराणादि के नाम से झूठी कथायें सत्यार्थ प्रकाश में लिख दी है।

हमारा उत्तर है कि सत्यार्थ प्रकाश में तो सब सत्य ही लिखा है। व बहुत कम लिखा गया है। आपके सामने हम आपके शिवपुराण की एक कथा रखते हैं। यदि किसी भी भारत के सनातनी पंडित में दम हो तो इसका खण्डन करके दिखावे। पुराण से हम सनातनी देवताओं की बदफैलियों का भण्डाफोड़ करते हैं।

शिव माया के चमत्कार

सनत्कुमार जी बोले! हे व्यास जी! शिव जी की सुखदायक कथा सुनो, जिसके सुनने मात्र से शिव जी में भक्ति उत्पन्न होती है। ७। हे मुनीश्वर! शिवजी की माया के प्रभाव से विष्णु ने काम में मोहित होकर अनेक बार पर स्त्री प्रसंग किया। १७। इन्द्र देवताओं का स्वामी होके गौतम मुनि की स्त्री पै मोहित होके पाप करने लगे तो उस दुष्टात्मा ने गौतम मुनि का शाप पाया। १८। जगत में श्रेष्ठ अग्नि भी शिव की माया से मोहित होने से गर्व से काम के वशीभूत हुए और फिर शिव ने ही उनका उद्धार किया। १६। हे व्यास जी। जगत के प्राण विष्णु भी शिव की माया से मोहित होके काम के वशीभूत होने से

पर स्त्री में प्रेम करने लगे। २०। तीव्र किरणों वाले (सनातनी) सूर्य भी शिव की माया से मोहित हो काम में व्याकुल होके घोड़ी को देखकर शीघ्र ही घोड़े का रूप धारण करने वाले हुए। २१। शिव की माया से मोहित हुए काम से व्याकुल चन्द्रमा ने भी गुरु पत्नी को हरण किया और शिव ने ही उनका उद्धार किया। २२। पहिले घोर तप में प्रवृत्त हुए मित्रा वरुणा दोनों मुनि भी शिव की माया से मोहित हो ॥२३॥ तरुण उर्वशी अप्सरा को देख के काम से पीड़ित हुए, तब मित्र ने घड़े में और वरुण ने जल में अपना वीर्य छोड़ा।२४। तब उस कुम्भ से मित्र के पुत्र वशिष्ठ जी उत्पन्न हुए, वरुण के वड़वानल के समान क्रान्ति वाले अगस्त जी उत्पन्न हुए।२५। शिव की माया से मोहित हुए ब्रह्मा के पुत्र दक्ष भी अपने भाइयों सहित अपनी (बहिन) वाणी से भोग करने की इच्छा वाले हुए।२६। ब्रह्मा ने शिव माया से मोहित हो अनेक वार अपनी पुत्रियों से भोग करने की इच्छा की।२७। शिवमाया से मोहित हुए महायोगी च्यवन ऋषि ने भी काम वश अपनी कन्याओं में आसक्ति की।२८। शंभु की माया से मुग्ध हुए गौतम मुनि ने शरद्वती को नग्न देखकर काम से व्याकुल हो के उसके साथ रमण किया।३२। फिर उस तपस्वी ने निकले हुए अपने वीर्य को दौने में रखा जिससे द्रोणाचार्य जी पैदा हुए ॥ ३३ ॥ शिव की माया से मोहित हो पाराशर जी ने दास कन्या मत्स्योदरी से विहार किया।३४। विश्वामित्र ने शिवमाया से मोहित हो मेनका से व्यभिचार किया।३५। शिवमाया से मोहित हो रावण ने काम के प्रभाव से सीता को हरण किया।३७। शिवमाया से मोहित हो बृहस्पति देवताओं के गुरु ने काम के वश अपने बड़े भाई की स्त्री के साथ भोग किया जिससे भारद्वाज पैदा हुए।३८। (शिवपुराण उमा संहिता अ०४)

इस शिवमाया से प्रगट है कि सनातन धर्म का महान देवता शंकर संसार में घोर व्यभिचार का प्रचारक था। पुराणों के देवता जैसे हैं वैसे ही उनके मानने वाले भी क्यों न बनेंगे। जैसे गुरु होंगे वैसे ही

चेला बनेंगे। सनातनी देवताओं के चरित्रों का कच्चा चिट्ठा पुराणों ने खोलकर रख दिया है।

इसीलिये हम कहते हैं कि ये सनातन सूर्य बनने वाले व इनके देवता महा पतित होते हैं। इन पर कोई थूके या न थूके, उनकी बदबू से सारा देश परेशान है।

हमने इस प्रकार गत पृष्ठों में सनातन धर्म मण्डल बांकनेर द्वारा प्रकाशित ट्रैक्ट के सम्पूर्ण मुख्य आक्षेपों का उत्तर दे दिया है। हमारा निवेदन है कि मिथ्या पौराणिक मत के सिद्धान्तों को त्यागकर जनता शुद्ध वेदोक्त धर्म को मानने वाले आर्य समाज की विचार धारा को स्वीकार करे तथा 'सत्यार्थ प्रकाश' के स्वाध्याय से अपने जीवन में प्रकाश ग्रहण करे तो सब का कल्याण होगा वरना उनका मानव जीवन बरबाद हो जावेगा।

॥ ओ३म् शम् ॥

खेद प्रकाश

शीघ्रता में प्रकाशित कराने से हम इस पुस्तक का प्रूफ नहीं देख सके हैं। इसका हमें खेद है। इसमें छापे की जो भी अशुद्धियां रह गई हों, विज्ञ पाठक उनको सुधार लेवें। आगामी संस्करण में उनको दूर कर दिया जावेगा।

—लेखक

भारत प्रिंटिंग प्रेस, हाथरस में मुद्रित।

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
प्रविष्टि क्रमांक 2865
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

— विज्ञप्ति —

सूर्य के सामने हट जाने पर [illegible] अन्धकार में छापे मारने वालों को अवसर मिल जाता है, वैसे ही आर्य समाज द्वारा खण्डन मण्डन एवं शास्त्रार्थों का कार्य बन्द कर देने से पौराणिक पण्डितों, मौलवियों, पादरियों एवं बौद्धों ने धर्मज्ञान से शून्य एवं धर्म के लिये हृदय में श्रद्धा रखने वाली जनता को धर्म के विषय में जान बूझ कर गलत मार्ग पर डाल कर विश्वासघात करके उसकी दौलत एवं उसकी भावना पर डाकेजनी करना प्रारम्भ कर दिया है। यह स्थिति स्वाध्यायशील एवं मिशनरी भावना रखने वाले आर्य समाजियों के लिये असहनीय बन रही है। ऋषि दयानन्द जी महाराज ने आर्य समाजियों के ऊपर उत्तर दायित्व सौंपा है कि वे वैदिकधर्म का मण्डन एवं अवैदिक मतों का खंडन करके संसार को सन्मार्ग का प्रदर्शन करायें

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमारी खण्डन मण्डन ग्रन्थ माला के अन्तर्गत श्री डाक्टर श्रीराम जी आर्य के कई क्रान्तिकारी ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं व आगे कई महत्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित होने जा रहे हैं। हमारे ग्रन्थों से सारे भारत के मत मतान्तरों में हल चल मच गई है। पाखण्ड प्रसारक उपदेशकों एवं संस्थाओं के छक्के छूट गये हैं। वे हमारे विरुद्ध अनर्गल प्रचार करने पर उतर पड़े हैं व प्रान्तीय सरकारों द्वारा हमारी पुस्तकों को जब्त कराने की कोशिश कर रहे हैं।

सत्य के प्रचार के लिए पाखण्डों का खण्डन आवश्यक है। हमारा निवेदन है कि हमारी खण्डन मण्डन ग्रन्थमाला के ग्रन्थों को भारी संख्या में जनता में प्रचारित किया जावे तो जनता धार्मिक अन्ध-विश्वासों से मुक्त हो सकेगी, मतवाले मतवादियों के हौसले पस्त हो जावेंगे, वे मैदान छोड़कर भाग खड़े होंगे तथा जनता को सत्य वैदिक-धर्म का प्रकाश देखने को मिलेगा।

अपने यहां के बुकसेलरों से हमारी पुस्तकें मांगिये न मिलने पर हम से सीधी मंगा कर उनका प्रचार कीजिए।

अध्यक्ष—वैदिक साहित्य प्रकाशन संघ
कासगंज (उत्तर प्रदेश) भारतवर्ष

धार्मिक जगत में हलचल मचा देने वाला

महाक्रान्तिकारी एवं अद्वितीय ग्रन्थ

शिवलिङ्ग पूजा क्यों ?

(लेखक—श्री डा० श्रीराम आर्य)

सम्पूर्ण भारत के कौने २ से निरन्तर जिस महान ग्रन्थ की जबदस्त मांग आरही थी जिसके शीघ्र प्रकाशन के लिये आर्यजगत का भारी दबाव पड़रहा था, पौराणिक जगत में तूफान पैदा कर देने वाला, अन्ध विश्वासों पर धुआंधार बम्बार्डमेन्ट करने वाला, धार्मिक क्षेत्र में पाखंड प्रसार के ठेकेदारोंके छक्के छुड़ा देनेवाला,मिथ्या देवतावाद की धज्जियां उड़ाने वाला, भूले भटकों एवं पौराणिक पण्डितों द्वारा बहकायेगये लाखों व्यक्तियों को अखण्ड प्रकाश दिखाने वाला वह महान ग्रन्थ—

शिवलिङ्ग पूजा क्यों ?

छपकर तैयार हो गया। इस विलक्षण ग्रन्थ में पुराणों के आधार पर शंकर पार्वती (दुर्गा) का स्वरूप, शिवलिंग पूजा की वास्तविकता, शिवजी के जीवन की अद्भुत घटनायें, शिव माया के घोर व्यभिचार प्रचारक प्रभाव के विलक्षण चमत्कार, शैवों एवं शिवलिंग पूजा के बहिष्कार की पुराणों की व्यवस्था, शिवजी के बहु स्त्री गमन एवं वेश्यागमन की पुराणोक्त कथायें, शिवलिंग व जलहरी के शिव व पार्वती की जननेन्द्रियों की नकल होने के पक्षमें पुराणों के अनेकों प्रमाण,वाममार्ग सम्प्रदाय का विवरण, शिवलिंग (मूत्रेन्द्रिय) पूजा के प्रारम्भ होने का इतिहास व कथायें आदि लगभग ८० विषयों का सप्रमाण एवं रोचक वर्णन किया गया है ।

इस ग्रन्थ को लेकर आप बड़े से बड़े पौराणिक विपक्षी विद्वानों को शास्त्रार्थ में परास्त कर सकेंगे। सत्य के खोजी लोगों को इससे दिव्य प्रकाश मिलेगा। इस ग्रन्थ रत्न को भारी संख्या में तुरन्त मंगाकर प्रचार करें। ऐसा न हो कि पहिले की तरह इसके लिये फिर आपको तरसन पड़े और यह दुर्लभ ग्रन्थ अप्राप्त हो जावे।

पता—वैदिक साहित्य प्रकाशन संघ कासगंज उ० प्र० (भारतवर्ष)